

मेरा प्रिय कवि/साहित्यकार (तुलसीदास)

रूपरेखा

- ★ प्रस्तावना
- ★ तुलसी का जीवन
- ★ जन्मकाल की परिस्थितियाँ
- ★ तुलसीदास जी का कृतित्व
- ★ तुलसीदास : एक लोकनायक-
- ★ तुलसीदास के राम
- ★ तुलसी की भक्ति भावना
- ★ तुलसी के काव्य में समन्वय की विराट चेष्टा
- ★ उपसंहार

प्रस्तावना – हिन्दी में जिन महान कवियों ने अपनी वाणी को समाज की मंगल साधना का लक्ष्य बनाया उनमें महाकवि तुलसी दास का स्थान विशिष्ट हैं। जिस कवि ने घोर संकट, संताप और तिरस्कार से हताशा भारतीय समाज को आशा और आत्म विश्वास के उद्धोष से जनजीवन प्रदान किया, उसके प्रति मेरी विशेष आस्था होना स्वाभाविक है उनकी यह घोषणा युगों युगों तक आस्थावान धार्मिकों को आश्वस्त करती रहेगी।

“जब जब होई धरम के हानी। बाढहिं असुर अधम अभिमानी ॥

तब-तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥”

तुलसी की भक्ति में योग कर्म और ज्ञान की त्रिवेणी बहती है। उनके काव्य की सबसे बड़ी विशेषता समन्वय की विराट चेष्टा है।

तुलसी का जीवन – रामाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि एवं सन्त, तुलसीदास जी की जन्मतिथि और जन्मस्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। सामान्यतः उनका जन्म 1532 ई० में हुआ माना जाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार इनका जन्म संवत् 1554 (1497 ई०) में श्रावण शुक्ल की सप्तमी के दिन हुआ था। तुलसी के जन्म - स्थान के विषय में भी कई मत प्रचलित हैं। इनमें दो मत प्रमुख हैं - (१) उत्तर प्रदेश में बाँदा जिले का राजापुर ग्राम। (२) एटा जिले का सोरों नामक स्थान। एक किंवदन्ती के

अनुसार जब ये उत्पन्न हुए थे तभी इनके मुख में दाँत थे। इनके बचपन का नाम रामबोला था इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। इन्हें बचपन में ही माता - पिता ने त्याग दिया था, अतः ये भीख माँगकर पेट भरते रहे।

जन्मकाल की परिस्थितियाँ- तुलसी का जन्म विषम परिस्थितियों में हुआ। हिन्दू समाज अशक्त होकर विदेशी चंगुल में फँस चुका था। हिन्दू समाज की संस्कृति और सभ्यता पर निरन्तर आघात हो रहे थे। कहीं पर कोई उचित आदर्श नहीं था। इस युग में मन्दिरों का विध्वंस और ग्रामों व नगरों का विनाश हो रहा था। संस्कार समाप्त हो रहे थे। तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था। सर्वत्र धार्मिक विषमता व्याप्त थी। विभिन्न सम्प्रदायों ने अपनी-अपनी ढपली, अपना अपना राग अलापना आरम्भ कर दिया था।

तुलसीदास जी का कृतित्व - कविकुलगुरु तुलसीदास की 12 रचनाओं का उल्लेख मिलता है-

1. रामलला नहछू - गोस्वामी जी ने लोकगीत की 'सोहर' शैली में इनकी प्रारम्भिक रचना है।
2. वैराग्य संदीपनी ,
3. रामाज्ञा - प्रश्न - इसमें शुभ - अशुभ शकुनों का वर्णन है।
4. जानकी - मंगल - इसमें कवि ने श्रीराम और जानकी के मंगलमय विवाह - उत्सव का मधुर शब्दों में वर्णन किया है।
5. श्रीरामचरितमानस- इस विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ में कवि ने , मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का व्यापक वर्णन किया है।
6. पार्वती-मंगल- यह मंगल काव्य है- शिव-पार्वती-विवाह का वर्णन करना है।
7. गीतावली, विनय-पत्रिका ,
9. श्रीकृष्णगीतावली- पूरी श्रीकृष्ण-कथा मनोहारी ढंग से प्रस्तुत की है।
10. बरवै – रामायण,
11. दोहावली,
12. कवितावली

इसमें सन्देह नहीं कि भावपक्ष और कलापक्ष दोनों ही दृष्टियों से तुलसी का काव्य अद्वितीय है।

तुलसीदास : एक लोकनायक- हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का कथन है— “लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय समाज में नाना प्रकार की संस्कृतियाँ, जातियाँ और विचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे , 'गीता' ने समन्वय की चेष्टा की और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।”

तुलसीदास के राम — तुलसीदास जी ऐसे राम के उपासक थे, जो सच्चिदानन्द परमब्रह्म थे तथा जिन्होंने पृथ्वी का पाप हरण करने के लिए अवतार लिया था -

"जब जब होय धरम कै हानी । बाढहिं असुर अधम अभिमानी ॥

तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा । हरहिं कृपा - निधि सज्जन पीरा ॥"

तुलसी ने अपने काव्य में सभी देवी - देवताओं की स्तुति की है , लेकिन अन्त में वे यही कहते हैं -

"माँगत तुलसीदास कर जोरे । बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥"

तुलसी की भक्ति भावना — जैसे तो तुलसी की भक्ति दास्य भाव की है लेकिन सच्ची भक्ति में कभी आदान-प्रदान का भाव नहीं होता है। भक्त के लिए भक्ति का आनन्द ही उसका फल है। अतः यही मानकर तुलसीदास जी श्रीरामचंद्र जी की भक्ति दास्य भाव एवं निष्काम भाव दोनों से करते हैं।

तुलसी के काव्य में समन्वय की विराट चेष्टा—समन्वय के कारण वे वास्तविक अर्थों में लोकनायक कहलाए। क्योंकि तुलसी के काव्य का सबसे बड़ा धर्म समन्वय है। उनके काव्य में समन्वय के निम्नलिखित रूप दृष्टिगोचर होते हैं- जैसे- सगुण - निर्गुण का समन्वय, कर्म, ज्ञान एवं भक्ति का समन्वय, युगधर्म का समन्वय, सामाजिक समन्वय तथा साहित्यिक समन्वय।

उपसंहार - तुलसी ने अपने युग और भविष्य , स्वदेश और विश्व , व्यक्ति और समष्टि सभी के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री दी है। तुलसी को आधुनिक दृष्टि ही नहीं , हर युग की दृष्टि मूल्यवान मानेगी। मणि की चमक अन्दर से आती है , बाहर से नहीं।

Gyansindhu Classes